

॥ श्री आदिनाथाय नमः ॥  
॥ श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

॥ श्री चोछितपूर्ण पार्श्वनाथाय नमः ॥  
॥ श्री राजेन्द्रसूरि गुरुभ्यो नमः ॥

## अवसर आयो रे... आयो रे... आंगणियो... आमन्त्रण

जिनाशापालक, जिनशासनप्रेमी, सुकृतानुरागी,  
भारतवर्षीय सम्माननीय सकल श्रीसंघ सबहुमान सादर जय-जिनेन्द्र  
स्वीकार।

पंचमकाल में आत्मशुद्धि के लिए दो आलम्बन हैं, जिनागम एवं जिनिबिंब। जिसमें जिनिबिंब को स्थापना निक्षेप द्वारा जिनालय में बिराजमान कर जिनदर्शन से निजदर्शन की यात्रा प्रारंभ होती है। गत जन्मों में हमारे द्वारा देवेन्द्र जिनके दास हैं, सुरेन्द्र जिनकी सेवा करते हैं, नरेन्द्र जिनको नतमस्तक हैं, चक्रवर्ती जिनके चरण चूमते हैं, ऐसे अरिहंत परमात्मा की भावनापूर्वक आराधना की गई होगी, जिसके फल स्वरूप पुनः इस जन्म में परमात्मा भक्ति का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिससे हमारा सम्यग्दर्शन शुद्ध-विशुद्ध होता है।

हमारे रेवतड़ा नगर में 108 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् १९७१ में फाल्गुन वदि १ के शुभ दिन-शुभ मुहूर्त में चर्चा चक्रवर्ती आचार्यदेव श्रीमद्दिजय धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा., तपस्वी मुनिश्री हर्षविजयजी म.सा. एवं मुनिश्री तीर्थविजयजी म.सा. के करकमलों से प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ आदि जिनिबिंबों की प्रतिष्ठा हर्षोल्लास से सम्पन्न हुई थी। तत्पश्चात् श्री संघ की उन्नति में अभिवृद्धि होती रही। वर्षों पश्चात् जिनालय जीर्ण होने पर हमारे श्रीसंघ ने जिनालय का आमूल जीर्णोद्धार सम्पन्न करवाया। प्रतिष्ठा हेतु प्रयास चलते रहे, लेकिन संयोग के बिना कार्य सफल नहीं होते। शुभ संयोग का आगमन

हुआ, श्रीसंघ ने त्रिस्तुतिक समुदाय के अजोडशासन प्रभावक, पुण्यसम्राट् प.पू. आचार्य श्रीमद्दिजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के वर्तमान पट्टधर श्री सौधर्मवृहत्तपागच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्रीमद्दिजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. एवं भांडवपुर तीर्थोद्धारक प.पू. आचार्य श्रीमद्दिजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. को भावभरी विनंति की। जिसे स्वीकार पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं प.पू. आचार्य भगवंतश्री ने हमें वि.सं.२०८०, महा वदि ५, दि.३१/०१/२०२४, बुधवार का सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त प्रदान किया। जिसे प्राप्त कर हमारा सकल श्रीसंघ आनंद से झूम उठा। मानो हमारा जन्म सफल हो गया।

प.पू. आचार्यदेव श्रीमद्दिजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की निश्ठा में प्रतिष्ठा संबंधी चढ़ावों की जाजम ऐतिहासिक हुई, जिससे हमारा उत्साह और बढ़ गया। प्रतिष्ठा महामहोत्सव के अन्तर्गत दि.२२ जनवरी २०२४ को परमात्मा की नूतन प्रतिमाओं, पूज्यपाद गुरु भगवंतों एवं साध्वीजी भगवंतों का भव्यातिभव्य नगर प्रवेश होगा। दि.२३ जनवरी २०२४ से दि.१ फरवरी २०२४ तक भव्यातिभव्य दशाह्निका महोत्सव होगा। माघ वदि ५, दि.३१ जनवरी २०२४, बुधवार को शुभ मुहूर्त में मूलनायक श्री ऋषभदेव भगवान आदि जिनिबिंब आदि की महामंगलकारी प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

इस प्रसंग पर आप सभी को पधारने का हमारा भावभरा आग्रह प्रेषित है। जिनशासन प्रभावक इस महामहोत्सव के साक्षी बनकर अपने जीवन को धन्य बनायें।

निवेदक : श्री आदिनाथ जैन संघ, रेवतड़ा